

## रचनाकार परिचय और सम्पर्क

अलंकारशास्त्र के विख्यात विद्वान **राधावल्लभ त्रिपाठी** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मप्र) में प्रोफेसर और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उपकुलपति रह चुके हैं। radhavallabh2002@gmail.com

महिषासुर-विमर्श पर अनुसंधानरत **संजय जोषे** फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन के इंटरनैशनल फ़ेलो होने के साथ-साथ टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज, मुंबई में पीएचडी कर रहे हैं। sanjayjoshi@gmail.com

रीतिकाल पर अनुसंधानरत **वेंकटेश कुमार** जामिया मिलिया इस्लामिया में शोधार्थी हैं। venkydu@gmail.com

साहित्य के नवीन विमर्शकार **राजकुमार बनारस** हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में हिंदी साहित्य के प्रोफेसर हैं। dr.kumar.raj@gmail.com

विख्यात साहित्यालोचक और विद्वान **नंदकिशोर आचार्य** हैदराबाद के इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फ़ॉर इनफ़ॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी में प्रोफेसर हैं। nandkishoreacharya@gmail.com

विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में विज़िटिंग फ़ेलो रह चुके **सागर तिवारी** ओ.पी. ज़िंदल ग्लोबल युनिवर्सिटी, सोनीपत (हरियाणा) में सहायक प्रोफेसर हैं। sagar@csds.in

मुस्लिम और अल्पसंख्यक मामलों के अध्येता **हिलाल अहमद** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। hilal@csds.in

कई बहुचर्चित पुस्तकों के रचयिता और राजनीतिक सिद्धांतकार **आदित्य निगम** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में प्रोफेसर हैं। aditya@csds.in

हिंदी की विख्यात नारीवादी कवि और संस्कृति-समीक्षक **अनामिका** दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेज़ी साहित्य की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। anamikapoetry@gmail.com

**विश्वनाथ मिश्र** काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के आर्य महिला पीजी कॉलेज के राजनीतिशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। vishwanathmishrabhuvaranasi@gmail.com

कई पुस्तकों के रचयिता और छह खण्डीय *समाज-विज्ञान विश्वकोश* के सम्पादक **अभय कुमार दुबे** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में प्रोफेसर और भारतीय भाषा कार्यक्रम के निदेशक हैं। abhaydubey@csds.in

उन्नीसवीं सदी के हिंदी-इतिहास पर शोधरत **चंदन श्रीवास्तव** इनक्ल्यूसिव मीडिया फ़ॉर चेंज परियोजना में कार्यरत हैं। chandan@csds.in

बौद्ध दर्शन के विख्यात विद्वान **अम्बिका दत्त शर्मा** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मप्र) के दर्शन विभाग में प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हैं। theadsharma@gmail.com

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त समाज-मनोविद् और *द इंटीमेट एनिमी* जैसी कृति के यशस्वी रचनाकार **आशिस नंदी** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली के निदेशक रह चुके हैं।  
reasonbuster@csds.in

**कंचन शर्मा** दिल्ली विश्वविद्यालय के केंद्रीय शिक्षा संस्थान में शोधार्थी हैं।  
kannu.kanchansharma@gmail.com

अपनी जनोन्मुख रिपोर्टिंग के लिए विख्यात **शिखा त्रिवेदी** पत्रकारिता के कई पुरस्कार जीत चुकी हैं।  
ravikant@csds.in

पत्रकार, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता **अच्युत यागिनक** अहमदाबाद के हाशियाकृत समुदायों के बीच कार्यरत सेंटर फ़ॉर द सोशल नॉलेज ऐंड एक्शन (सेतु) के संस्थापक हैं।

कई पुस्तकों की लेखक इतिहासकार **शैल मायाराम** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में प्रोफेसर हैं। shail@csds.in

पत्रकार, अनुसंधानकर्ता और *गीता प्रेस ऐंड मेकिंग ऑफ़ हिंदू इण्डिया* के लेखक **अक्षय मुकुल** आजकल अज्ञेय की जीवनी लिख रहे हैं। akshaya.mukul@gmail.com

*दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि* की रचयिता **सुधा चौधरी** मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, राजस्थान में प्रोफेसर और दर्शनशास्त्र विभाग की अध्यक्ष हैं।  
sudhachoudhary98@gmail.com

हिंदुस्तान टाइम्स समूह से सम्बद्ध समाजकर्मी, लेखक और पत्रकार **संत समीर** ने *हिंदी की वर्तनी, अच्छी हिंदी कैसे लिखें और स्वदेशी चिकित्सा* जैसी पुस्तकें लिखी हैं। santsameer@gmail.com

**नरेश गोस्वामी** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली के भारतीय भाषा कार्यक्रम के साथ कार्यरत हैं। naresh.goswami@gmail.com

साहित्येतिहास में दलित साहित्य को उसका उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए अनुसंधानरत **बजरंग बिहारी तिवारी** देशबंधु कॉलेज हिंदी साहित्य के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। bajrangbihari@gmail.com

कवि, चिंतक, अनुसंधानकर्ता और मार्क्सवादी विमर्शकार **प्रसन्न कुमार चौधरी** *अनंत का छंद और अतिक्रमण की अंतर्गता* जैसी गम्भीर पुस्तकों के रचयिता हैं। prasanna.kc55@gmail.com

दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य के निवर्तमान प्रोफेसर और *कोलोनीयल ट्रांजेक्शंस : इंग्लिश लिटरेचर इन इण्डिया* समेत कई पुस्तकों के लेखक **हरीश त्रिवेदी** ने हिंदी की साहित्यिक संस्कृति के इतिहास-लेखन में योगदान किया है। harish.trivedi@gmail.com

गिरमिटिया मजदूरों के इतिहास पर अनुसंधानरत युवा इतिहासकार **आशुतोष कुमार** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में विजिटिंग फ़ेलो हैं। ashutoshkranti@gmail.com

हैदराबाद विश्वविद्यालय, तेलंगाना में राजनीतिशास्त्र के प्रोफेसर **ज्योतिर्मय शर्मा** *हिंदुत्व : एक्सप्लोरिंग द आइडिया ऑफ़ हिंदू नेशनलिज़म और अ रिस्टेटमेंट ऑफ़ रिलीजन : स्वामी विवेकानंद ऐंड मेकिंग ऑफ़ हिंदू नेशनलिज़म* के लेखक हैं। me@jyotirmayasharma.in

देवारती रॉय चौधरी दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग से पीएचडी कर रही हैं।

devarati.chowdhury@gmail.com

फ़िल्म और रेडियो में भाषा पर शोधरत रविकान्त विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। ravikant@csds.in

कई पुस्तकों के रचयिता और समाज-विज्ञान के श्रेष्ठ अनुवादक कमल नयन चौबे दिल्ली विश्वविद्यालय के दयाल सिंह कॉलेज में राजनीतिशास्त्र के सहायक प्रोफेसर हैं।

kamalnayanchaube@gmail.com

इतिहासकार राकेश पाण्डेय विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। rakeshkpandey@csds.in

मृत्युंजय चटर्जी दिल्ली स्थित कलाकार और डिज़ाइनर हैं। mritunjay.chatterjee@gmail.com

चंदन शर्मा सराय और भारतीय भाषा कार्यक्रम में सक्रिय हैं। chandan\_sharma@csds.in

मनोज मोहन दिल्ली स्थित सांस्कृतिक पत्रकार हैं। manojmohan2828@gmail.com

## प्रतिमान के लिए संदर्भ-साँचा

**हिं**दी के शोध-संसार में वैसे तो अब लोग बड़े पैमाने पर संदर्भन करने लगे हैं, लेकिन अराजकता या उदासीनता अभी-भी कम नहीं है। हमारी कोशिश होगी कि लम्बे अरसे में विकसित और निहायत लोकप्रिय शिकागो या हार्वर्ड मैनुअल जैसी वैश्विक संदर्भन प्रणालियों का मूलतः इस्तेमाल करते हुए उसे भाषा के स्थानीय व्यवहार के मुताबिक अनुकूलित करें। लेखक/लेखिकाओं से अपील है कि वे अपने आलेख का शब्द-संयोजन करते वक़्त इन चीज़ों का खयाल ज़रूर रखें, ताकि हमें सम्पादन में और सजग पाठकों को पढ़ने में कम मेहनत करनी पड़े। शोधपत्र में नाना प्रकार के स्रोतों को संदर्भित करने का तरीका नीचे मिसाल दे कर सिलसिलेवार समझाया गया है।

खयाल रहे कि कुछ मामलों में हमारा तरीका इन तरीकों से अलग है। पहली बात, हम मूल आलेख में संदर्भ न डालकर फुटनोट का इस्तेमाल करेंगे, और लेख के आखिर में एक ग्रंथ-सूची देंगे। दूसरी बात, हम फुटनोट व ग्रंथावली दोनों ही जगहों पर डॉट का इस्तेमाल करेंगे, जबकि मूल आलेख में पूर्ण विराम का। और, हमारे यहाँ जैसा रिवाज है नाम वैसे ही रखेंगे, यानी पहले पहला नाम, फिर उपनाम, और ग्रंथावली भी हिंदी वर्णक्रमानुसार इसी ढर्रे पर चलेगी। हमारे यहाँ लेखक अपने नाम के पहले डॉक्टर/डॉ. या प्रोफ़ेसर/प्रो. लगाते देखे गये हैं, हम उनके छोटे रूप से भी परहेज़ करेंगे, सिवाय प्राथमिक स्रोतों के, जैसे मोती बी.ए. अगर अपने तखल्लुस के साथ लिखते थे तो हम उनकी तमाम रचनाएँ मोती बी.ए. के नाम से ही डालेंगे। संक्षेप में नाम लिखते समय डॉट का प्रयोग करें और स्पेस न दें, जैसे : जी.पी. श्रीवास्तव, न कि जी. पी. श्रीवास्तव। विख्यात संस्थाओं या देशों के नाम लिखते समय डॉट लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे : यूनेस्को, न कि यू.एन.ई.एस.सी.ओ.; या यूके, न कि यू.के.।

हम नुक्ते का प्रयोग भी करेंगे, क्योंकि यह कुछ अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों के लिए ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, जुलिफ़्कार बुखारी, जिज़ेक, जीटीवी, क्रियामत, फ़रमाइश, ग़ज़ल, खयाल, वग़ैरह। उसी तरह, हम हमेशा अर्धचंद्र या चंद्र बिंदु का इस्तेमाल करेंगे, जहाँ भी लगता है, जैसे कि 'फ़ुटबॉल' या 'ऑल इण्डिया रेडियो' या फिर 'हँसना' या 'पाँच' में। खयाल रहे कि अगर किसी भी उद्धृत दस्तावेज़ में अगर नुक्ते / चंद्र बिंदु का इस्तेमाल मूल में नहीं हुआ है तो हम अपनी तरफ़ से न लगाएँ। उसी तरह अगर देसी पंचांग/संवत का प्रयोग हुआ है तो उसी का इस्तेमाल करें। जहाँ तारीख़ साफ़ नहीं / अनुपलब्ध है, वहाँ इसका ज़िक्र ज़रूर हो। कोलन या विसर्ग लगाते समय ध्यान रखें कि उसके दोनों तरफ़ स्पेस हो। हाँ, अगर किसी अंक के तुरंत बाद विसर्ग लगाया जा रहा है तो स्पेस केवल उसके बाद आएगा। हर जगह अरबी अंकों यानी 1, 2, 3, 4 आदि का प्रयोग करें।

### फुटनोट में किताब के संदर्भन का क्रम :

पाद-टिप्पणी के रूप में संदर्भ का संक्षिप्त रूप इस्तेमाल किया जाएगा, लेकिन पृष्ठ संख्या अवश्य लिखी जाएगी। जैसे : लेखक का नाम (कोष्ठक में प्रकाशन का वर्ष) : पृष्ठ संख्या।

मिसाल : सुमित सरकार (1985) : 21.

लेख के अंत में दी जाने वाली संदर्भ-सूची में किताब के सम्पूर्ण संदर्भन का क्रम :

सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इण्डिया : 1885-1947*, मैकमिलन, लंदन.

ज़ाहिर है कि यहाँ पृष्ठ संख्या नहीं देनी है।

अगर वही संदर्भ फुटनोट में दोबारा आ रहा है, तो महज़ लेखक के नाम से काम चला सकते हैं, पर साथ में विसर्ग लगा कर पृष्ठ संख्या देना लाज़िमी होगा। अगर एक ही संदर्भ लगातार फुटनोट में है, तो 'वही : पृष्ठ संख्या' से काम चल जाएगा। अगर पृष्ठ भी नहीं बदला तो सिर्फ 'वही' पर्याप्त होगा। अगर लेखकों या सम्पादकों के दो नाम हैं तो पूरे जाएँगे, अगर दो से ज़्यादा, तो दोनों के बाद वगैरह लगाएँ। लेकिन पहले फुटनोट और ग्रंथ-सूची में सारे नाम, पूरे जाएँगे। अगर किताब के एक से ज़्यादा संस्करण छप चुकी है तो जिस संस्करण का इस्तेमाल हुआ है, उसके ज़िक्र के साथ कोष्ठक में मूल प्रकाशन का साल भी जाएगा। अगर एक ही रचनाकार की एक नाम से एक ही साल की दो शीर्षक-रचनाएँ उद्धृत की गयी हैं तो उनके हवाले में भेद करने के लिए फुटनोट/ग्रंथावली में रचना के नाम के बाद प्रकाशन वर्ष के साथ क, ख...आदि लगाया जाए।

#### मिसाल :

रामचंद्र गुहा (1982 क), 'फ़ॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इण्डिया : अ हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीक्ली*, खण्ड 18, अंक 44 : 1882-1896.

----- (1982 ख), 'फ़ॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इण्डिया : ए हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीक्ली*, खण्ड 18, अंक 45 : 1940-1947.

अगर किताब अनूदित है तो अनुवादक का नाम फुटनोट और ग्रंथावली में किताब के नाम के बाद कोष्ठक में आएगा :

मिसाल : मन्ना डे (2008), *यादें जी उठीं : एक आत्मकथा*, अंग्रेज़ी से अनुवाद : रक्षा शुक्ला, पेंगुइन बुक्स, नयी दिल्ली.

#### सम्पादित किताब में छपे लेख :

मिसाल : हरीश त्रिवेदी, 'ऑल काइंड्स ऑफ़ हिंदी : दि इवॉल्विंग लैंग्वेज ऑफ़ हिंदी सिनेमा', आशिस नंदी व विनय लाल (सं.), *फ़िंगरप्रिंटिंग पॉपुलर कल्चर : द मिथिक ऐंड दि आइकॉनिक इन इण्डियन सिनेमा*, ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली : 51-86.

#### जर्नल-आदि में छपे लेख :

रचनाकार (प्रकाशन वर्ष), 'लेख का नाम', पत्र का नाम, खण्ड, अंक, किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक, आखिर में अगर ख़ास पृष्ठ का ज़िक्र करना हो तो :

मिसाल : प्रेमलता वर्मा (2001), 'इब्ने-मरियम हुआ करे कोई', *बहुवचन*, वर्ष 2, अंक 8 (जुलाई-सितम्बर) : 110-128, 115.

#### पत्रिका के आलेख :

मिसाल : बजरंग बिहारी तिवारी (2012), 'केरल में दलित आंदोलन और दलित साहित्य', *कथादेश*, वर्ष 32 : अंक 5 (जुलाई) : 76.

**अखबार में छपी रचना या रपट :**

लेख : दीपानिता नाथ, 'रेडियो रिवाइण्ड', आई : द सण्डे एक्सप्रेस, नयी दिल्ली, 10 अगस्त, 2008.

रपट : 'यह क्षेत्र हिंदी में संकट का समय : असगर', जनसत्ता (2005), दिल्ली, 20 मार्च : 7.

छपे हुए साक्षात्कार के हवाले के लिए : साक्षात्कार देने वाले का नाम > शीर्षक व बातचीत करने वाले का नाम उद्धरण चिह्नों के बीच > किताब है तो लेखक से शुरू करके किताब वाला संदर्भन, अगर पत्रिका है तो पत्रिका वाला।

मिसाल : विश्वनाथ त्रिपाठी, 'रामविलास शर्मा 1950 में बीटीआर वाले माने जाते थे' : अजेय कुमार से बातचीत, उद्भावना (रामविलास शर्मा महाविशेषांक : (सं.) प्रदीप कुमार), अंक 104 : 199  
अगर बातचीत खुद लेखक/लेखिका ने की है तो जिक्र यूँ होगा : लेखक/लेखिका द्वारा साक्षात्कार, 13 अक्टूबर, 2005, नयी दिल्ली.

**अभिलेखागार की सामग्री का हवाला :**

होम डिपार्टमेंट, 42-48/नवम्बर 1916, ए. जेल्स, नैशनल आर्काइव्स ऑफ़ इण्डिया, (आगे एनएआई).

**अदालती मामलों / फ़ैसलों का हवाला यूँ दिया जाएगा :**

ऑल इण्डिया आईटीडीसी वर्कर्स यूनियन एवं अन्य बनाम आईटीडीसी एवं अन्य, (2006).  
2007एआईआर 301, (2006) 10 एससीसी 66.

**विश्वव्यापी वेब से ली गयी सामग्री का हवाला यूँ दिया जाएगा :**

मिसाल : विकीपीडिया पर 'पान सिंह तोमर' :

[http://en.wikipedia.org/wiki/Paan\\_Singh\\_Tomar](http://en.wikipedia.org/wiki/Paan_Singh_Tomar); 28 जुलाई 2012 को देखा गया.

अगर प्रविष्टि हिंदी में है तो उसे हिंदी में दिखाएँ : [http://hi.wikipedia.org/wiki/राजेश\\_खन्ना](http://hi.wikipedia.org/wiki/राजेश_खन्ना). कई बार वेब पतों से नक़ल-चेपी करते हुए भारतीय भाषाओं की लिपि बदलकर अबूझ हो जाती है, जिससे बचने का उपाय यह है कि अंग्रेज़ी वेब-पते की नक़ल-चेपी करते समय देसी सामग्री को यथावत अपने वर्ड प्रोसेसर में अलग से टंकित करें.

चलती का नाम गाड़ी, पार्ट-4: यूट्यूब : <http://www.youtube.com/watch?v=KWqkCpybNLo&feature=g-vrec>; 30 जुलाई 2010 को संदर्भानुसार देखा/सुना/पढ़ा गया.

अगर लेख फ़िल्म-केंद्रित है, तो ग्रंथावली के साथ फ़िल्मावली भी देनी होगी, जिसमें फ़िल्म का नाम, साथ में निर्माता/निर्देशक और रिलीज़ हुए साल का जिक्र ज़रूरी होगा।

मिसाल : 'अब दिल्ली दूर नहीं', आरके फ़िल्म्स, निर्देशक : अमर कुमार, 1957. लेकिन मूल आलेख में ब्रैकेट में सिर्फ़ फ़िल्म का नाम व रिलीज़ वर्ष के जिक्र से काम चल जाएगा : ('अब दिल्ली दूर नहीं', 1957).

## भारतीय भाषा कार्यक्रम

पिछले सत्रह साल से **विकासशील समाज अध्ययन पीठ** (सीएसडीएस) का **भारतीय भाषा कार्यक्रम** समाज-विज्ञान और मानविकी में हिंदी के चिंतन-जगत को समृद्ध करने की परियोजना चला रहा है। अभी तक चार ग्रंथमालाओं (लोक-चिंतन ग्रंथमाला, लोक-चिंतक ग्रंथमाला, सामयिक विमर्श ग्रंथमाला और सरोकार ग्रंथमाला) के तहत वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पंद्रह से ज्यादा पुस्तकों का बड़े पैमाने पर स्वागत हुआ है। इन ग्रंथमालाओं के तहत लोकतंत्र, भूमण्डलीकरण, दलित और आधुनिकता, सेकुलरवाद, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रवाद, राजनीतिक प्रणाली, नारीवाद और सेक्शुअलिटी जैसे विषयों पर उच्चकोटि की सामग्री प्रकाशित की गयी है। अपने शुरुआती वर्षों में कार्यक्रम का जोर अंग्रेजी में उपलब्ध समाज-चिंतन की उच्च-स्तरीय रचनाओं को अनुवाद और सम्पादन के जरिये हिंदी में लाने पर था। बाद में इस कार्यक्रम ने अंग्रेजी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी अनुसंधानपरक समाज-चिंतन और उसके साथ जुड़ी हुई ज्ञानमीमांसक चुनौतियों से जुड़े प्रश्नों पर समग्र रूप से विचार करना शुरू किया। इसीलिए अंग्रेजी से अनुवाद और सम्पादन की प्रक्रियाओं को दी गयी प्रमुखता क्रायम रखते हुए अब यह कार्यक्रम हिंदी में अनुसंधानपरक समाज-चिंतन के मूल लेखन को प्रोत्साहन देने पर केंद्रित है। समाज-विज्ञान और मानविकी की पूर्व-समीक्षित पत्रिका **प्रतिमान समय समाज संस्कृति** का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक अहम कदम है जिसकी परिणति आगे चल कर अनुसंधान और लेखन की एक सघन और बहुमुखी योजना में होगी। फिलहाल परियोजना हिंदी-जगत तक सीमित है, लेकिन जल्दी ही अन्य भारतीय भाषाओं में पहलकदमियाँ लेने की कोशिशें की जाएँगी।